

गोत्रजन्तो वर्धनाम्

—श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'—

धन होइत छैक संयमसँ, ओरियाकऽ
चललासँ, परिश्रम कयलासँ, खाली डाँउ-

व्यावहारिक बनू । हम एकटा गाछ काटि
कऽ जारनि चीरऽ कहि आयल छिए । सय
तौला दही लागि जायत । ककरो चीनी ले'
ब्लाक पठा दियौ ।"—ओ कहैत गेला ।
बड़ 'टु दी फैक्ट' लोक छथि श्री शिवजी
बाबू ।

“जे आज्ञा सँह हो ।”—ओ कृतज्ञता-
पूर्ण स्वरमे बाजल ।

पात्र आबि गेलाह । पहिल पिण्ड देल
गेल । पिताक नामक उपरान्त 'प्रेते'
पढ़ैत ओकर करेज जेना कंठमे आबि
गेल । कर्मक उपरान्त पत्नी लऽ गेलथिन
फलाहार करबऽ ले ।

“शंकर ?”—ओ अपना किशोर वय-
सकें भागिनसँ पुछलकें —“टेलीग्राम
सभ प्रस्तुत भेलह ।”

“बहुत तँ दऽअयलिऐ । प्रायः सभटा ।”
—शंकरक उत्तर छल ।

ओ ओकरासँ थोड़े छोट वयसक सभसँ
छोट पुत्रकेँ कहलकें —“विक्रम, मोन भसि-
आइए ही । कने रामचरितमानस उत्तर
कांड सस्वर सुना दिहऽ ।”

“बाहर आबियौ । हम प्रस्तुत छी ।”
—विक्रम बाजल ।

बाहर आयल तँ ओकर पुरोहित भज्जू
बाबू श्राद्ध-कर्मक वस्तुजातक एकटा लिस्ट
लेने प्रस्तुत छलथिन —ई व्यवस्थापक महा-
वीरजीकेँ देखि कऽ दऽ दियनि । बरतन
आ कपड़ाक लिस्ट थिक । दरभंगासँ मड . वा
लेब तँ पाँच टके सँकड़ा कम दाम लागत ।”

ओ लिस्ट लऽ लेलक आ पुरोहितजी
चल गेलाह ।

समाज-प्रमुखसभ आबि गेल छलाह ।
चाह-पान-सुपारी भेल ।

“जेहने ओ छला, तेहने काज हो, लोक
की कहत ? अयँ ओ, जकरा एहन ऐश्वर्य,
पुत्र आ समाज हो, तनिक काजो तँ तेहने
हो । श्राद्धमे पंचदान कहब आ भोज-भातमे
अठगामा ।”—प्रमुखक प्रमुख प्रारम्भ कय-
लनि ।

विक्रम रामचरितमानस लेने घुरि
गेलाह ।

बहेड़ा, दरभंगा ।

डाँउ करैत रहत ते धन नहि भऽ जयतँक ।
ई मान्यता छलनि युगल झाक । दू भाइ
छलाह, साधारण गृहस्थमे निठठाह गृह-
स्थ गनल जाइत छलाह । दस बीघा खेत,
एक जोड़ा बड़द दूटा महीस आ पँकारीक
हेतु एक जोड़ा दू दाँतक बच्छा खुट्टापर
रहित छलनि ।

संयम ककरा कहैत छैक से सिखबाक
हो तँ युगल झासँ सीखि सकैत छी । प्रति-
वर्ष अपन चासक एक बीघामे तुलसीफूलक
कामोद, सतरिया, मालभोग प्रभृतिक मुग-
न्धित मेही धानक खेती करैत छलाह आ
चाउर कुटाकऽ शुरू मघारिमे कोठीमे मूनि
कऽ राखि लेल करथि । दुधरखा-तिनबरखा
मेही चाउर बेचनिहारमे हिनक नाम परो-
पट्टामे प्रथम अवैत छलनि । खुट्टापर बारहो
मास एकटा लगहरि दुधगरि महीस अपने
चरबैत छलाह, जाहि प्रसादेँ दस-बीस
सेर मुच्चा घिउ घरमे छलनि । छलाह
लोक अपने छाह्नी चाटि लेत तँ धन-संचय
कोना भऽ सकैत छैक ? दोसर छाह्नी
खयलासँ चर्वी मोट होइ छैक, तँ धीयो-
पूताकेँ चहटने छैत छलाह ।

ओना, धीयो-पूता छलनिहो दुनू
भाइमे दू टा मात्र । जेठ जनकेँ एक टा
बेटा आ छोट जनकेँ एकटा बेटा । तँ ई
नहि बूझि लेबाक थिक जे दुनू भाइक पत्नी
काक बन्ध्या छलथिन । सन्तति भेलनि तँ
दुनू देयादनीकेँ भँडौ-बकरी जकाँ, मुदा
भगवानक मर्जी जे बँचलनि एके टाकऽ ।
जेठ जनकेँ पंचभगिनी त्रिपुर-सुन्दरी भेल-
थिन-रुद्राणी, भवानी, मृडानी शर्वाणी
आ इन्द्राणी मुदा, जीबैत रहलथिन शर्वाणी
मात्र ।

छोटजनकेँ पाँच पाण्डव, परन्तु जीबैत
रहलथिन एक मात्र नकुल । तथापि घिउ
छाह्नीक स्वादसँ जीवन भरि वंचित रह-
लथिन । पहिनहि कहलहुँ जे जिहुलाहकेँ
धन नहि होइत छैक ।

अपन आश्रमक हेतु बिनु हर बरदेँ
उपजनिहार खेसाड़ी, बुड़िबक देवीक हेतु
अक्षतमे काज आवजवला कुथी, परती-
परांत, गाछी-कलमबागमे हरहा फेरि
उपजवला तेवखा आदि उपजावधि आ
राहड़ि केराओ, खेड़ही, बदाम आदि
सुअन्न बचवाक हेतु राखथि । जाहि वस्तुक

वीहनि आन ठाम नहि भेटय, चल जाउ
युगल झाक घरमे जुगताओल भेटत । दाम
सभ वस्तुमे दू पाइ बेसी लगवे करत, मुदा
वस्तु भेटत एक नम्बर । एहि सभसँ नगदी
आमदनी भऽ जाइनि ।

जेठजन छलथिन सुधंग । कोदारि-
कुरहरि हाँसू-खुरपी, घास, भूसा, चास-
वास ताहि सभसँ सरोकार आ मलिकाना
चलबैत छलथिन युगल । आगिकेँ पानिकऽ
देथुन वा पानिकेँ आगि, जेठजनकेँ कोनो
मतलब नहि । दलानपर बड़दकेँ सानी
देल जाइक आ आड'नमे जेठजनकेँ ।
नोन छैक कि नहि अथवा भोजन सुस्वादु
हो वा कुस्वादु, फोड़नसँ दू टा मेरिचाइ
दऽ देलकनि तँ महोमहो भऽ गेलनि ।

शर्वाणी कन्यादान योग्य भेलनि तँ
युगल जानथि । जे नीक बुझताह से कर-
ताह । युगल एहन जुगलतगर वर तकैत
छलाह जे भविष्यमे पछुआइक भूत ने भऽ
जाइनि ।

भतीजी कोनो कुरूप नहि रहथिन ।
रंग ने गोर ने कारी, एक दम गर्दखोर मूसा
रंग, हरौत बाँसक जड़ियाठ आ शर्वा-
णीक गोड़ाठमे अन्तर करब कठिन । धन-
गर जूटल दुनू भऽहुँ लगैत छलनि जेना
कदीमापर दू टा ठंडी दू दिससँ आबि
बैसि गेल हो । थभकल पंजा आ थथड़ाह
गर्दनि, अधबोलिया बोल, थोपल-थापल
गुल-गुल थुल-थुल शरीर जाहिमे ओड'ठि
गनिहारकेँ मसलङ्गेक सुख बुझयतँक ।

पटकथा

पितृपक्ष अपन-अपन पितरक प्रति
श्रद्धा-निवेदन करबाक हेतु उपस्थित होइत
अछि आ देवीपक्ष लोकमे महिषासुरमर्दिनी
भगवती दुर्गाक चरणमे भक्तिक सुमन
अर्पित करबाक अवसर जुटबैत अछि ।
किन्तु महालयक दिन दुहू तत्त्व—श्रद्धा
ओ भक्ति-अनायास समन्वित भऽ उठैत
अछि । एक दिस कर्तव्यमे पितृ तर्पणक
अवसान ओ दोसरदिस कल्पनाक आँखिमे
भगवती दुर्गाक चित्र ।

—फोटो : दिलीप बनर्जी

एहन भतीजीक हेतु वर तकैत-तकैत
सखुआ पाँजिक एक तीस-वत्तीस वर्षक
प्रौढ़ युवककेँ टेबलनि । ई बेचारे पाँच-
सात वर्षसँ सौराठसँ घूरल अबैत छलाह ।
ओना सन्तलाल ठाकुर जन्म लेने छलाह
निस्सन भलमानुसक घरमे, मुदा कोदारि
चलयबामे कोनो मुसहड़केँ मात कऽ सकैत

छलाह । हस्ताक्षरक नामपर चानि लगा
औँठा पिजाकऽ सोझाँमे बढा दितथि ।
पाँच हाथ लम्बा, बाघ-सन कल्ला, हुडार-
सन थुथुन, ऊँट-सन गर्दनि, गेँडा-सन
पहुलाठ, हाथी-सन आँखि आ घोड़ा-सन
टाप, उखरि-सन डाँड़ आ तासा-सन पेट,
औन्हल मटकूड़-सन छाती, भथल इनार-

सन ढोँढी, धोबियाक पाट-सन पीठ,
चरस पीवऽवला पाइप-सन नाक, अख-
ड़िया बिहड़िया मेघ-सन रंग, दरिया-
दाखजवान सभटा मिलाकऽ घटोत्कचक
पाँचम पीढ़ीमे पड़ैत-सन व्यक्तित्व, ओहने
मायावी आ ओहने मोचण्ड ।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

छैक, मनुष्यताक नहि ! प्रीजर्व इट, प्रीजर्व इट !—एकरा सुरक्षित राखह ! एकटा बूढ़क उपहार ई तीनटा नमरी की तौ स्वीकार नहि करवह ? आ' एकसरे हमरा सामर्थ्यो नहि अछि तोहर, देशक अष्टन चुकयबाक !—बहुत किछु हम सब तोरासँ लऽ गेल छी—ई तँ अणुओ नहि छह ओकर बदलामे ! हमरा सभकेँ बहुत किछु चुकयबाक अछि !

केली साहेब बलजोरी स्नेहसँ मंगलक मुट्ठीमे तीनू नमरी पकड़ा देलथिन । आधा नमरी मुट्ठीसँ बहरायल रहल ! गाड़ी प्लाटफार्मपर लागल रहैक । केली साहेब अपन हेट एवं एअर बैग उठा लेलनि । मंगल धर्मस पकड़ा देलकनि । केली साहेब मंगलकेँ अपना लग बजाय ओकर माथपर स्नेहक एकटा 'किस' दऽ विदा भेलाह । गाड़ीमे आबि बैस रहलाह । मंगल प्लाटफार्मपर केली साहेबक गाड़ीक सामने खिड़की लग ठाढ़ रहल ।

—यंगमैन, अपना माटिकेँ, अपना देशकेँ, अपना जन्म भूमिकेँ अपनहुँसँ बेसी प्रेम करियह । देखलह नहि, जीवनक अन्तिम समयमे तोहरे उपनिषद्क मेसेजसँ वशीभूत भऽ हम आयल रही अपन जन्म भूमि ।

—भारतक एक मुट्ठी माटि ले जे हमरा ऊपरमे पहिने छीटल जायत कब कमर करैसँ पहिने आफर माइ डेथ ! आ' आ' केली साहेब माथ झुका लेलनि ।

गाड़ी खूजि गेलैक आ मंगलक हाथ ऊपर उठि गेलैक ।—मुट्ठीमे दवल नमरी हवामे लहरा उठल जेना १९४७मे ब्रिटिश झंडा—यूनियन जैक—झूक गेल रह्य आ तिरंगा लहराय लागल रह्य ।

जे० एन० कॉलेज, मधुबनी ।

गोत्रान्नो

(पृष्ठ ६ क शेषांश)

जहिया युगल वर लऽ कऽ पहुँचलाह, तँ शर्वाणीक माथ एके टाड़पर नाचऽ लगलीह, मुदा घरवला आवि परबोधऽ लगलथिन जे एहि गाममे केहन-केहन माथ पागवला छथि, तँयो सखुआ पाँजिक वर अनबाक साहस ककरो ने भेलनि ।

आडनाली कहलथिन—मनसा केहन खोरनाठ सन छैक तँ स्वामी तुरन्त युक्ति देलथिन—जमाय विष्णु होइत छथि आ विष्णुओ भगवान कारिए छथि । स्त्री

टोकलथिन—नाक केहन थोपल छैक तँ चट दऽ बूढ़ा फेर वकीलथिन—बेटीसँ जमाय उर्नसँ रहथि तखने बेटीक मानदान बेसी होइत छैक । दोसर, बियाहकेँ नाकसँ कोन सरोकार ? तेहन कमामुत देह छनि जे बेटीकेँ कथूक विधूति नहि होयत । जेहने सखुआ पाँजि तेहने सखुआ-सन निस्सन । जकरा घड़सूड़पर एक धील देखिन से पोत-पर बैसल मच्छड़ जकाँ ठामहि पिस्ता भऽ जायत ।

कहबी छैक—खतोमे कमल फुला-इत छैक । से शर्वाणीकेँ पहिले सन्तान बेटा भेलैक । मातामह ओहि नेनाकेँ दिन राति टडने रहथिन । एकेटा बेटी, अधिक काल शर्वाणी नैहरैमे रहथि । क्रमशः बूढ़ा महिसिक पीठ पर्यन्तपर नातिकेँ संगहि राखथि । युगल मनहि-मन प्रसन्न होथि जे भने छौंड़ा पाटि लागि रहल अछि ।

परन्तु ओ छौंड़ा महिसिक पीठपर चढ़ल-चढ़ल कृष्णजन्म आ हनुमान चाली-साक नाडि पकड़ने शिक्षाक झौंझमे सन्हिया गेलनि । गामेक स्कूलसँ द्वितीय श्रेणीमे मैट्रिक पास कऽ गेल । तावत माता-मह स्वर्गवासी भऽ गेलथिन । आपक श्राद्धमे जे शर्वाणी अयिली से धारकासासुर जय-बाक नाम नहि लेलनि । युगल झाकेँ अनेक विघ्न-बाधा सोझामे दृष्टिगोचर होवऽ लगलनि । गौआ घरआक जोरपर छौंड़ा कालेजमे नाम लिखबा लेलक । सालोभरि खर्च वर्चमे भोताही होइत रहलैक । तखन एकटा युक्ति सोचलक । रखने रह्य एन० सी० सी० । एम्हर देशमे आपत्कालीन स्थिति लागू भऽ गेलैक । मातामहक बर्खीक अवसरपर बुलगा निन कट दाढ़ी बनौने चारि गोटा एन० सी० सी० ड्रेसमे संगीकेँ संग लेलक । एकटा वकीलसँ बाजि नामक एक मजबूत बनवा टाइप करवा, टिकट साटि जेवमे लेलक आ धर्मधमायल पहुँचल मामा गाम । युगल झा भाइक एको-दिष्ट कऽ रहल छलाह । जहिना हुनका महा पात पढ़वऽ लगलथिन “गोत्रान्नो वर्द्धताम् दातारो नोदति वर्द्धताम्” तहिना कानमे कड़कल शब्द पहुँचलनि—“ठहरिये ।” देखैत छथि सोझामे सैनिक वेशमे चारि-

पाँच युवक ठाढ़ । एकटा युवक पुछलकनि—इसका अर्थ बताइये । युगल झा घरझायल महापातक; मुँह ताकऽ लगलाह आ बिधि-आइत कहलथिन—अर्थ ई बतावेङ्गे ॥

महापात बेचारे अकालकाइत, अक-पकाइत, सकलिकाइत कहलथिन—इस मन्त्र का अर्थ ? अर्थ है—गोत्र बढ़ाओ, दाता बढ़यो, वेद बढ़य, सन्तति बढ़ओ । युवक कहलकनि बस कीजिये । आप दोनो देशद्रोही हैं । सरकार परिवार नियोजनपर करोड़ों खर्च कर रही है और आप सन्तति बढ़ने की प्रार्थना करते हैं ? आप दोनो को गिरफ्तार किया जाता है ।

आब तँ महापात कटहरक को जकाँ आ यजमान भदवरिया गूड़ जकाँ पलऽ लगलाह । पितरक कर्म आधा भेल छलनि आ अपना सभ कर्म भऽ गेलनि । घाटि-पोटा उठि गेल । टोलक लोक तँ पुलिस-क नाम सुनि अपने पतनुकान लेने छल । लगलथिन पयर दाढ़ी धरऽ, लगलाह कानऽ कलपऽ । तखन जेवीसँ कागज बाहर कऽ ओहिपर औंठा छाप सहित हस्ताक्षर करा लेलकनि । ओहिमे मजमून छलैक जे एहि सम्पत्तिमेसँ आधाक अधिका-रिणी शर्वाणी ठकुराइन थिकीह, हम एहिसँ बाज अयलहुँ । गामक बाहर जा ओ सभ अपन मेक-अप बदललक आ वर्षीमे अछिन्नरे भोज खाइत गेल । ई छल एन० सी० सी०क उर्दी-पेटीक प्रताप ।

मिश्र टोला, दरभंगा ।

मिथिला मिहिर

चन्द्राक दर

वार्षिक २५२० अर्द्ध-वार्षिक १३ २०

त्रैमासिक ७ २०

एक कौआ

एक मनुख

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

ओ अर्थात्, रमेश अपने आडानमे बैसल चाह पीबि रहल छल । पत्नीक कर्कश स्वभाव चित्तके उद्विग्न कयने छलैक । गैस चुलहा रखने अछि । दू दिनसँ गैस सधल छैक । गंगामे भयंकर बाढ़िक कारणे बरौनी तेल शोधक कारखानापर संकट आवि गेल छैक । एका समयसँ अधिव उपभोक्ता गैसक आडेर बुझ कयने छैक, मुदा यातायातक सुविधा भेले उत्तर फेर गैसक स्टाक भऽ सकतैक आ जखन-जखन गैस समाप्त होइत छैक, पत्नी एहिना ठकठेना ठानि दैत छैक । चाहैक चुस्की लैत ओ मन कथामे डूबल भासल जा रहल छल ।

एहि बेर उत्तरा नक्षत्र पिनाकऽ राखि देलक । बहुते ठाम पानिक हेतु हाहाकार मचल छलैक । खेतमे लागल भदौ चौपट भऽ गेलैक । धान सेहो टग्न हुनैत छलैक । रमेशक सुरता गामपर चल गेलैक । ठीके गृहस्थ उत्तराकेँ कनहा नक्षत्र कहैत छैक । जेम्हर बरिसऽ लागल ताहि दिस दहबोर कऽ देलक आ जाहि दिस नजरि नहि पड़लैक, बुन्दपातो नहि । मधुवनी दिस धू-धह जरिते छैक ।

दू वर्षसँ बाढ़ि बिहारक राजधानी पटने दिस परिकल अछि । गत वर्ष अर्थात् १९७५ ई०मे अचानककमे आविऽ हु-मजिलाकेँ छवऽ लागल । पटनेमे पटो-टनि भऽ गेलैक । परिकल साँठ जेना कोनो खेतमे परिकल तँ जजानिकेँ विहति कऽ राखि दैत छैक तहिना ई बाढ़ि फेर एहू वर्ष पटनेमे हूलऽ चाहि रहल छल मुदा, एहि बेर सरकार ततबा सतर्क छल जे मुका बाइपास रोड लग ढाटि देलकनि से ठठनहि रहलनि । ताही तामससँ एहि बेर बरौनी उद्योग क्षेत्रपर जोर लगौने अछि, मुदा ओहू ठाम हारि मानहि पड़ैतैक ।

रमेशक डेराक पछुआरामे बाँसक बीट छैक । नवका कोपडसभ बाँससँ पैघ भऽ गेलैक अछि । ओ देखलक, एक टा कौआ एक टा कोपडक छीपपर बैसल नव बह-राइत कड़कीक जड़िसँ खोइया छोड़य-बामे अपस्यात अछि ।

सोम दिन ईदक छुट्टी भऽ गेलैक, मंगल दिनक छुट्टी लऽ शनि दिन कार्यालयसँ सोचि कऽ चलल छल जे गामसँ भऽ आयब । पहिलुक पत्नीसँ एक मात बालक अपन गृहस्थीक भार उठौने छैक । परन्तु, शनिक सोझमे जे बदरी लघलक से डाकाक वचन — "शनि सत्ते रवि अइ मंगल बारह

दिन" चरितार्थ कऽ कऽ रहैतैक । गैसो ओहि राति सठि गेलैक ।

बेर-कुबेर लेल ओना हीटर रखने अछि, मुदा हीटरमे मीटर ततबा उठैत छैक जे एक साधारण क्षिराणीकेँ नहि छजैत छैक । अद्याय तीन सय टाका मासिक कमयनिहारक हेतु हीटरक उपयोग अपन भविष्यक प्रति अत्याचार करब थिकैक । तखन कहूँ छैक, पहिने जान तखन जहान । कबमि भोजित कार्यालयसँ अयबाक कारणे मोन सदिया गेल छलैक । एक काप चाह पीबाक उत्कट इच्छा भऽ गेल छलैक, किन्तु अक्काइ रहलाक कारणे बिजली लाइन सेहो मोल छलैक, हीटरो जरब असम्भव । एम्हूँ अक्काइ ओम्हूँ घरमे-इन्धनक सर्वथा अभाव, चाहैक के पूछय राति भोजमे चूड़ा चीनी छाड़ि दोसर उपाय नहि ।

यद्यपि ब्लाक आफिस लग छोटछिन बाजारो छैक, परन्तु रमेश दोकानपर चाह नहि पिवैत अछि । एकर अनेक कारण । एक तँ चूहपर चढ़ल केतलीमे चाह बरकैत रहलैक, खदकैत रहलैक जे स्लो प्वायजन-मन्द विष थिक । दोसर ओहि ठाम गिलासकेँ दोकान-दार जेना कोनो अपाटक छोड़ा सड़कक कातमे नदी फीरि, खत्ताक पानिसँ छोचि लैत अछि तहिना गिलासकेँ छोचाकऽ चाह ढारि दैत छैक आ तेसर, सभसँ बेसी चाह ढारि दैत छैक आतेसर सभसँ बेसी ई जे सञ्चारी दपतरमे काज कयनिहार क्षिराणीकेँ भ्रष्टाचारमे आक्ल फँका देवाक ई सभसँ पैघ अड़डा थिक । टाका पैसाक लोभ कबना ने होइत छैक? किन्तु लोभकेँ जगयबाक परिस्थिति उत्पन्न कऽ कबरो फँसयबाक काज स्वार्थान्धलोक खूब करऽ जनैत अछि । रमेश विचार-तन्तुपर बढैत गेल-बहुते लोक विनु घूस लेने काज नहि करैत छैक से बात सत्य, मुदा एहिमे बहुते लोक एहन अछि जे स्वार्थालोक सभक द्वारा घूस लेबाक अभ्यासी बनाओल गेल अछि । एहन अभ्यास लगयबाक हेतु कार्यालयसँ परतारिकऽ चाहक दोकानपर लऽ गेल आ अनैतिक रूपेँ काज कऽ देवाक पारिश्रमिकक रूपमे दस-पाँच टाकाक नोट जेबीमे खोसि देलक । शुद्ध राष्ट्रवादी होयबाक कारणे रमेश अनैतिक आयसँ ब्रुत डेराइत अछि आ द्वितीय विवाहक ई पत्नी एकरा मूर्खता बुझैत छैक । एही-कारणे दाम्पत्य जीवन काहि कटकटक बीच बिता रहल अछि । ओ सोचैत गेल-

अवैध पाइमे भेटला उत्तर लोकक जीह नमरि जाइत छैक जकर परिणाम स्वरूप वार्द्धक्यमे कष्टे टा भोगऽ पड़ैत छैक । एतेक उत्कट इच्छा रहितो चाह पीबाक हेतु दोकानपर नहि गेल । एक दिन चल गेला उत्तर ढाट टूटि जइतैक आ चाहक दोकानवला जे एकरासँ धखाइत रहैत छैक, से घाख छुटि जइतैक । रातिमे चूड़ा चीनी फाँकि सूति रहल । दिनकेँ ओटेल दूध छलैक से ठठे उठाकऽ पीबि लेने छल ।

भोक्का चाह तँ आरो आवश्यक । घरमे स्टोभ छैक, तँ मुदा उपयोग नहि होयबाक कारणे अथवा दोसरे कोनो कारणे ओ अकाजक छैक । पछिला मासमे गैस सठलापर एक दिन पूर्ण प्रयत्न कयने छल जे स्टोभ जराबी, मुदा नहि जरल रहैक, तथापि मोनमे भेलैक जे एक बेर आइ फेर देखिएक । बिजलीवला डेरामे मटियातेल जोगाकऽ रखबाक अभ्यास लोककेँ नहि रहैत छैक । कदाचित् बिजली लाइन गुम भेल तँ मोमवत्ती आदिसँ तात्का लिक काज चला लेलक तथापि ई एक लाल टेममे भरिकऽ मटिया तेल रखने रहैत अछि । रातिमे तँ लालटेमसँ बाज चला-बऽ पड़ल रहैक । ओहिसँ थोड़ेक तेल ढारि कऽ आधा घंटा धरि स्टोभकेँ जरबाक चेष्टा करैत रहल, परन्तु सभ श्रम निष्फल भेलैक । झपसीजान छोड़यबाक हेतु तँ यारे ने छलैक । छाता तानि थोड़ेक जारनि अनने छल जे ईटा जोड़ि किछु भोजन बना-ओल जा सकैक, किन्तु पत्नीएकेँ ठाम जूआ पटक देलकैक जे एहि तीतल जारनिसँ हम आँखि फोड़बऽ नहि जायब । परिणाम-मतः दिनोमे वैह चूड़ा चीनी प्राण रक्षा आधार भेलैक । मनेमन पत्नीक एहन कर्कश स्वभावसँ विखिन्न होइत रहल । दिनभरि टोका चाली बन्दे जकाँ रहलैक । दिनान्तमे बनेक बुनछेक जकाँ भेलैक । रातिमे स्वीच आन कऽ छोड़ि देने छलैक से ओहिना रहैक । वैज्ञानिक सुविधासँ मोनमे जेना वितृष्णा भऽ गेल रहैक । गैस चुलहा कतेक सुविधाजनक, परन्तु बेरपर धोखा देनिहार । बिजलीसँ कतेक सुख, मुदा बेर पड़ने किछु ने । यह सब सोचैत छल । चाहक एहन अभ्यासी कि एक भऽ गेल ताहि हेतु अपनापर झुझाइत छल तावत भवऽ बिजली बल्व जरि उठलैक । जेना बीच गंगामे फँसल जहाजकेँ सहसा,

(शेष पृष्ठ २३ पर)

कराय।" द्वितीय पंचवर्षीय योजनामे सेहो एहि पक्षपर बहुत विस्तारपूर्वक विचार कयल गेल? कहल गेलैक जे—“योजनाक सफल क्रियान्वयनक हेतु ई आवश्यक अछि जे श्रमिक तथा प्रबन्धमे मधुर सम्बन्ध बनल रहय।”

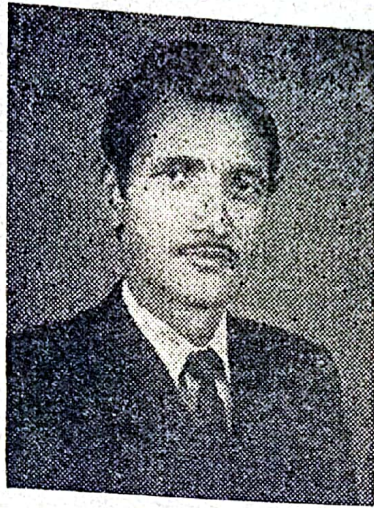
कर्मचारीकेँ प्रबन्धमे हिस्सा भेटौक, तकर सफल क्रियाशीलनक क्रममे भारत सरकार १९५६ई० सुझाव देबाले' एक गोटा अध्ययन दलकेँ नियुक्ति कयलक जे फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड, युगोस्लाविया, बेल्जियम आदि देशमे भ्रमण कऽ एहि योजनाकेँ विस्तारपूर्वक अध्ययन कऽ अपन प्रतिवेदन सन् १९५७ई०मे सरकारकेँ प्रस्तुत कयलक। पुनश्च भारतीय श्रम-सम्मेलनक १५ म अधिवेशन जुलाई १९५७ ई० मे भेल, एहि सम्मेलनमे भारतवर्ष कर्मचारीकेँ प्रबन्धमे सहभागिता देबाक प्रश्नपर विचार करैत ई प्रस्ताव पास भेल जे, सम्प्रति प्रयोगात्मक स्तरपर निजी आ सार्वजनिक ५० गोटा संस्थामे एहि योजनाकेँ लागू कयल जाय। एकर सफल संचालनक हेतु त्रिदलीय उप-समितिक स्थापना कयल गेल जाहिमे उद्योगपति श्रमिक आ सरकारक चारि-चारि गोटा प्रतिनिधिकेँ सम्मिलित कयल गेल।

तृतीय पंचवर्षीय योजनामे एकर महत्त्व स्वीकार करैत योजनाक प्रारूपमे ई द्रष्टव्य अछि जे “आर्थिक प्रणालीकेँ शान्तिपूर्वक चलयबा ले' एकरा प्रजातान्त्रिक पद्धतिपर संघटित कयल जाय। एहि क्रममे ई आवश्यक जे प्रबन्धमे कर्मचारीकेँ सहभागिता भेटौक।”

कतेको देशक अध्ययन क्रममे ई देख-बामे अबैत अछि जे ई प्रणाली संतोषजनक रहल अछि। मुदा भारतमे ई योजना अधिक प्रभावशाली नहि भऽ सकल। ताहिमे एकर मार्ग विस्तार-निस्तार किछु एहन तत्त्व बाधक अछि जे द्रष्टव्य थिकः—

प्रथम कारण तबाने मार्गक अवरोधनमे ई अछि जे प्रबन्ध आ श्रम दुहुनक विचारधारामे काफी अन्तर अछि। दुनु एक दोसरकेँ प्रतिद्वन्द्वी बुझैत अछि। जे श्रम प्रबन्धकेँ शोषण कयनिहार बुझैत अछि तँ प्रबन्ध श्रमकेँ कँचाक बदला कीनऽबला वस्तु बुझैत अछि। संगहि योजनाक उपादेयताकेँ बुझबाक सर्वथा अभाव। कि एक तँ सम्बन्धित पक्ष अपन रुचिकेँ एहि दिस संकुचित राखल अछि।

संयुक्त समितिक कार्यमे एकरूपताक अभाव एकर परिभाषा, क्षेत्र तथा कार्यक्रममे बिलाइ एहि योजनाक बीच देवाल जकाँ ठाढ़ भऽ गेल। संयुक्त प्रबन्ध समिति आ श्रमसंघक बीच अधिकार क्षेत्रमे संघर्ष सेहो एकर बाधाक एक प्रमुख कारण



लेखक

कहल जा सकैछ। प्रगतिवादी नियोजताक अभाव आ हुनका कठोर दृष्टिकोण सेहो एहि योजनाक सफलताक मार्गमे रोड़ा रहल अछि। संडे, श्रमिकमे आपेक्षा सेहो एकर मार्ग विस्तारमे बाधक।

एतबे नहि अधिकांश मिल मालिक एकर विरोध एहि आधारपर करैत छथि जे श्रमिककेँ प्रबन्धमे सहभागिता भेटि जयतैक तँ ओ आन्तरिक गोलैसी आ उद्योगक वित्तीय तथा गोपनीय वस्तु-स्थितिसँ भिन्न भऽ जायत।

मुदा आव समय बदलि गेलैक। घोषक तर बहुरिया आव नहि सकैत छथि। अतः एहि परिवर्तित युगमे एहि तर्कक कोनो स्थान नै। नियोजताकेँ आव अपन विचार बदलि पड़तनि। राजनीतिक आवरणकेँ हँटा समाजवादी सूत्रक बन्धनमे जकड़ने कुशल नहि तँ समाज-कल्याणक रीढ़ टूटि जयतैक आ विद्रोह भेनहि।

प्रबन्ध सहभागिताक योजना कोना सफल संचालित भऽ सकैछ एहि सन्दर्भमे निम्न समस्याक समाधान परमे आवश्यक अछि—सर्वप्रथम एहि क्षेत्रमे नियोजता, श्रमिक आ सरकार सभकेँ प्रयासक आवश्यकता छैक। सुदृढ़ एवं उत्तरदायी श्रम संघक गठन करब आवश्यक। संगहि प्रबन्धक वर्ग तथा श्रमिक वर्गकेँ अपन परम्परागत दृष्टिकोणकेँ सेहो बदलऽ पड़तनि। दुहुँ विरोधी नहि एक दोसरक सहयोगी बुझथ। हुनका लोकनिकेँ ई बुझऽ पड़तनि जे उद्योग रूपी गाड़ीक दुनु पक्ष दु गोटा पहिया छथि जे दुनु संग नहि चलथि ते उद्योग रूपी गाड़ी कवनो अपन पटरी छोड़ि सकैछ।

ई सर्वविदित अछि जे श्रमिकक हित ओकर मजदूरी, काजक घंटा, सुरक्षा एवं

परिवेदना प्रणालीपर निर्भर छैक। अस्तु उपर्युक्त जे शर्त सभ अछि से मंत्री भावसे निष्पादित हो।

ई अक्षरशः कह्य सत्य जे श्रमिक प्रबन्धमे सहभागिता भेटौक, मुदा ई कथमपि नहि कहल जा सकैछ जे ई “संजीवन वूटी” आ डाइक्रिस्टिसन, पेनिसिलीन थिक जाहिसँ उपभोगक सभ रोग छूटि जयतैक। आवश्यकता छैक जे प्रबन्धक श्रमिककेँ कारगर अधिकार प्रदान करय आ श्रमिकसेहो तालाबन्दी आ हड़तालक थुकम फसैतीकेँ छोड़य तथा नेतागण सेहो गोलैसीसँ दूर हँटि उद्योगक विकासपर ध्यान देथि। आ सभसँ तँ मूल गप्प छैक जे राष्ट्रिय हितमे अपन हित जाधरि सभ वर्ग नहि सोचताह आ अपन अपन बरवादीकेँ भस्व नहि छोड़ताह ता धरि ई योजना सफल नहि भऽ सकत।

चतरिया, पो० शुभंकरपुर, जि० दरभंगा

एक कौआ

(पृष्ठ १५ क शेषांश)

किनार पकड़ने ओहिपर चढ़ल यात्रीकेँ आनन्द होइत होयतैक तेहने आनन्द ओहि काल भेलैक। जल्दीसँ हीटर जरौलक। पहिने एका कप पानि देलक, फेर सोचलक—ओ कर्कश रह्यो, हम अपन मनुष्यत्व नहि छोड़ब। झपसीक कारणेँ दूधवाली दूध नहि दऽ गेल छलैक। बेर-कुबेर ले' घरमे दुग्धचूर्ण रखने रहैत अछि। ताहिसँ दू कप चाह बना एक कप पत्नीक लग बिनु किछु कहने राखि अपनेआडनक ओसारा-पर बसि चाह पीबि रहल छल।

पत्नी कप लऽ कऽ आगाँमे पटक गेलि छलैक। ओकर नजरि ओहि बाँसक छीप-पर छलैक। बसातक झोक छीपकेँ दोमि दैत छलैक, कौआ पाँखि फड़फड़ाकऽ शरीरकेँ सन्तुलित करैत खोइया तोचमे व्यस्त छल, ओ टूटि नहि रहल छलैक। ताबत दोसर कौआ अग्रलेक आ खोइयाकेँ चाङुरपर दाबि लेलक। पहिलुक कौआ आश्वस्त भऽ लोलसँ खोइयाकेँ कट दऽ काटि लेलक आ विजयी मुद्रामे दुनु उड़ल तारक गाछपर चल गेल। रमेश चुस्की लैत सोचैत रहल—मनुष्यक जीवनसँ एही पक्षीक जीवन बेसी सुखी छैक, एकरा कलहक अवसर नहि नै अबैत हीयतैक। कोना एक दोसरक सहायक होइत छैक।

मिश्र टोला, दरभंगा।

धरम - संकट

श्री चन्द्राधारी मिश्र भवन

एहिबेर भुटकुन भाइ बहुत दिनपर दरभंगा आयल छलाह। हम अपन कोठलीमे किछु लिखवाक मूडमे कागत कलम लऽ बैसले छलहुँ तावत बाहरसँ केबाड़ खट-खटायल। सुनि कऽ मोन घोर भऽ गेल।

ओहि समयमे किछु समैया काजक हेतु लोकक अबरजात बढ़ि गेल छलैक। समैया काज माने सिजनल अर्थात्, प्रवेशिका परीक्षाक उत्तर-पुस्तिका सभक मूल्यांकन भऽ रहल छलैक। एक टा मूल्यांकन-केन्द्र दरभंगामे छलैक। एहन समयमे ममिअतक मेसिअतकेर पितृअतक सार लोकनि अपना मामक जमायकेर साक्षाते पिसिअतक हेतु कापीमे नम्बर बढयवाक हेतु सम्बन्ध जोड़ने पहुँचि जाइत छथि आ क्रमपात एहन-सन जे अहाँसन एहन निकट सम्बन्धी जखन एहि नगरमे छथि तखन हमर विद्यार्थीकेँ प्रथम श्रेणीक अंक किएक नहि भेटि जयतनि ? जँ दूरमे कापी रहितनि तखन जे भाग्यमे होइतनि।

एहन लोककेँ कोना बुझाओल जाय जे चक्रव्यूह-भेदन मूल्यांकन केन्द्रमे कापीक पता लगा कऽ ओहिमे अंक बढयवासँ सुगम होइत छैक। जँ स्पष्ट शब्दमे कहल जाय जे एक तँ कठिन, दोसर एहन अर्न्तिक काज हमरासँ नहि भऽ सकत तँ सर-कुटुम्ब, इष्ट-अपेक्षित, दोस्त-महिम, जिला-जयवार सभ ठाम निन्दा-अभियान तुरन्त आरम्भ। पहुँचाइ ओ चलल आ निन्दा-प्रसारणकार्य सेहो। एहन लोकसँ भगवाने रक्षा करथि।

से, केबाड़क खटखट सुनि एक बेर देह सिहरि गेल, दू मिनट सोचवामे लागल कि नाम धऽ कऽ सोर करवाक शब्द कानमे पहुँचल आ स्वर बुझायल जे भुटकुन भाइक थिकनि। तखन तँ हितोपदेशमे वाणत कपोतराज चित्रग्रीवक स्वर अकानि कऽ जेना हिरण्यक "आः पुण्यवानस्मि" कहैत बीहरिसँ बाहर भेल छल तहिना धड़फड़ा कऽ हमहूँ बाहर अयलहुँ आ भुटकुन भाइ-सन प्रिय सुहृदयकेँ देखि गद्-गद भऽ गेलहुँ।

केबाड़ फोलिते भुटकुन भाइ बज-लाह—आब अहाँ काछु जकाँ टाड। मूड़ी सभ भीतर सुटका, लेलहुँ भले बाहर कोठलीमे रहैत छलहुँ।

हम कुशल-क्षेमक वाद पुछलियनि—
एहि बेर बहुत दिनपर दरभंगापर कृपा कयलऐक अछि !

—“आहि रे बा ! आब अहाँलोकनि ओहदा बढ़ि गेल अछि। पहिने जिलामे रहैत छलहुँ आ हमरो लोकनिके जिलासँ काज पड़िते रहैत अछि, मुदा आब तँ दर-भंगा कमिशनरी भऽ गेल। आब ओतेक प्रयोजन नहि रहैत अछि। तखन तँ खास कऽ नेयारि भासि कऽ आउ से पलखति नहि। विशेष प्रयोजन पड़ि गेल तँ सोच-लहुँ चली, सुकठीक बनीज आ पशुपतिक दर्शन।”

हम घबड़यलहुँ जे प्रायः ईहो कापी-एक प्रसंग अयलाह अछि। ई छथि कनेक खटवताह लोक, बिगड़ैत देरी लंगवे ने करैत छनि। हँ, गुन एतबे छनि जे बेसी काल ओ टेम्पर रहैत नहि छनि।

एक बेरुक हिनक हाल सुनू। भेलैक तँ बहुत दिन। एतेक दिनमे वयसक कारणे स्वभावमे बहुत परिवर्तन भऽ गेलनि अछि। पहिने जकाँ आब सिरिंग नहि चढ़ैत छनि, दूध जकाँ उधिया कऽ चुलहामे खसवाक हेतु वृत्त नहि भऽ जाइत छथि, स्प्रिट जकाँ भक दऽ आगि नहि धऽ लैत छनि, बुद्धिमे करैत नहि मारि दैत छनि, टिनही बाटी जकाँ तुरन्त धीपि नहि जाइत छथि, मोटर साइकिल जकाँ भड़भड़ाइयो ने उठैत छथि, पंच धातु तँ पुरने छनि। हम ताहि दिनुक गप्प कहैत छी जहिया ई परिवर्तन नहि भेल रहनि। हमर डेरापर एक टा गरीब विद्यार्थी भानस करैत छल। पुरखाही डेरामे तँ नापल-जोखल चिप्पी लागल। बासि-बेरहटक प्रश्ने नहि, तेँ जकरा पातमे जे पड़लैक से खा जाओ, छोड़ने दूर भऽ जयतैक। भुटकुन भाइ मर्यादाक नामपर एक बाकुट भात छोड़ि देलथिन। दोसर साँझ ओ विद्यार्थी ओतवा कम कऽ हिनक थारीमे भात देलकनि।

ओना, भुटकुन भाइ कोनो खौकार लोकक प्रतिष्ठा नहि पौने छथि जे कोनो बरियातीमे हिनका लऽ जायव लोक आवा-श्यक बुझैत होइनि, तथापि कुर्सीपर बैस-निहार बाबू जकाँ चारि टा फुलकीसँ निर्वाह कयनिहार तँ नहि छथि, एक पुरुषकेँ नहि, एक मर्दकेँ जतेक बयबाक चाही से ईहो खाइत छथि। तेँ भातक

माता देखि झुझा गेलाह। दिनोमे एक कोन खालिए रहि गेल छलनि। तेँ ओ मोन मसोसिकऽ भोजन कऽ लेलनि आ मर्यादाक रक्षा धरि नहि छोड़लनि। प्रात भेने ओ विद्यार्थी केर ओतेक भातकम कऽ देलकनि। पीढ़ीपर जाइत देरी थारीपर नजरि गेलनि। जनीक गप्प खाइत पीढ़ी-पर तेना फनलाह जेना पीढ़ीक तरंग गहुमन फुफकारि उठल होइनि। बाबि उठलाह—जाधरि ई चाण्डाल भनमिया एहि डेरामे रहत ताधरि एतऽ पयर नहि देव।

अपने पूजापरसँ उठि कतेक नेहोरा मिनती कयलियनि, ओहि विद्यार्थीके तत्काल डेरामे भगौलहुँ ने तँ हरही गौर जकाँ ई चारु बाध देखितथि। कुर्ता तँ पहिरिए चुकल छलाह, जुतामे पयर देव बाँकी छलनि। से घटना हमरा आइ मोन पड़ि गेल।

चाह पीवाक आग्रह कयलाक क्रममे अपन बकनाइ आरम्भ कयलनि—युग ठामहि उनटि गेलैक। नीक कयलहुँ जे अहाँ शहरमे घर बना लेलहुँ। गाम आब नरक भऽ गेल, नरक। ककरो नीक क्यो देखै ने चाहैत छैक।

अहाँकेँ तँ हमर घर देखलै अछि, सड़कक कातेमे पड़ैत अछि। युगक संग तँ लोककेँ चलहि पड़ैत छैक। दू टा, चारि टा नीक लोक अविते जाइत रहैत छथि, कखनो विशिष्टो लोक आबि गेलाह तँ हुनका आगू छुछे चाह कोना देबनि ? तखन पीच रोड भऽ गेलाक कारणे बस, ट्रक, कार गामे-गाम दौड़ऽ लगलैक अछि, ताहिसँ ई सुविधा अवश्य भऽ गेलैक अछि जे हल्लुक-फल्लुक नमकीन आदि समय-पर भेटि जाइत छैक।

हम भुटकुन भाइक संकेत बुझि गेलि-यनि तेँ बेटीकेँ चारि टा नमकीनो देवाक इशारा कऽ देलऐक। ओ अपन भाषण-जारी रखैत कहऽ लगलाह—हम अपन पाइ खर्च कऽ दू गोटेक जे स्वागत करैत छिएक ताहू लेल लोककेँ देहमे आगि लगैत रहैत छैक—एकर ई शान ! हाकिम-हुकमानकेँ अपन दलानपर अँटका लेत ? बबुआन जकाँ पनबट्टी रखैत अछि, जखन-तखन बड़प्पन छाँटऽ ले कहत—चाह पीबि ने लियऽ। एहन राग-द्वेष शहरमे नहि

ने रहैत छैक। सभ अपना-अपनामे मगन रहैत अछि।

चाहक चुस्की लैत युगक आलोचना करऽ लगलाह—नवतुरिया सभक ताल देखि कऽ छगुन्तामे पड़ल रहैत छी। पोरुप तँ देशसँ समाप्त भऽ रहल अछि। नवका छौंड़ा सभ मौगियाही अर्थात् ब्लाउजक कपड़ाक अंग बनावैत अछि। छौंड़ी सभ केश छँटवा लैत अछि आ छौंड़ा सभ बड़ा लैत अछि, दुनू मेमसन केश बनौने रहत। बाम पहुँचापर घड़ी आ दहिना पहुँचापर एकटा कड़ा चललैक अछि से पहिरने। बीच माथपर सिउँथ फाड़ने एक डाँटी सिन्दुर बितु उदास ने तँ सभ मौगियाही बाना। ताहिपरसँ ई मोटरक बच्चा माने स्कूटर ततेक फड़ि गेलैक अछि जे जहाँ देहपर कनेक गुदा भेलैक कि एक टा कीनि लेलक आ गलिए कुचिए हुल-कल फिरल।

“अपनो गाममे क्यो लेलक अछि?”
—हम पुछलियनि।

भुटकुन भाइ कहऽ लगलाह—अहाँ गामे छोड़ि देलहुँ तँ की बूझवैक। चुल्हाइ वावू अपन बेटाकेँ आदर्श विवाह करौलनि। खाली कहाँ-दन एकटा मेडिकल कालेज खुजलैक अछि जाहिमे पन्द्रह हजार टाका देलापर घोड़ा-गदहा सभक नाम लिखा जाइत छैक। से कन्यागतसँ पहिने ओहिमे बेटाक नाम लिखवा लेलथिन आ विदाइमे एम्हरका अलंग-फलंग माने सूट-बूट, रेडियो, घड़ी आदिक अलावे एकटा स्कूटर किनवा लेलथिन तखन बेटा देलथिन आ नाम भेलैक आदर्श विवाह।

एहि बेर चुल्हाइ झाक माथ मरि गेलथिन। आदमे बेटा आयल रहथिन। क्षौरक दिनमे छौंड़ा केश कटयबाक हेतु तँयारे ने होइत छलनि। कहनि, ई सभ ढोंग थिकैक। जखन अपने विष खयबा-पर वृत्त भऽ गेलाह तखन केश कटौलकनि।

एकादशाहुँ दिन गेलहुँ भोज खाय तँ फुलपेन्ट पहिरने आ पहाड़ी मूस आ कि खढ़याक छालक टोपी पहिरने पाँतमे परसैत। हम कहलियेक—बाज हौ! ब्राह्मण भोजनक पाँतमे परसैत छह, ई टोपी माथ-परसँ उतारि लैह। चट दऽ कहैत अछि—केश कटौने छी से लाज होइत अछि।

ताहिपर हमरा बजना गेल। बजना गेल सँह कहबाक चाही ने तँ अपना मुँहमे क्यो बिण्डे लेपओ, हमरा कोन मतलब? से हमरा बजना गेल जे बाटक कासमे ठाढ़ भऽ घोड़ा जकाँ मृतबामे लाज नहि होइत छह आ पितामहीक आदमे केश कटौलहतकर लाज? सभ हँसि देलकैक।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

नै कल्याण नहि । समाज अशान्त

धर्म-संकट

(पृष्ठ १४ क शेषांश)

पयबाक भूत एहन तत्त्व थिक जे
तो दलक नैतिकताकेँ चूर-चूर
छि -संविद -सरकारक समयमे
फसर सभक व्यापक परिमाणमे
। कऽ ई भूत अपन भयंकर
देखा चुकल अछि । फल्लाँ आन,
थिकाह, तेँ जँ हिनका फल्लाँ
दियनि तँ ई हमर लक्ष्य साध-
ल्लाँकेँ ओतऽसँ हटा दियनि
। आहत नहि होयत, तेँ बड़
र भेल छलैक । एकर अर्थ
क स्वयं अनैतिकताकेँ प्रोत्सा-
नाह अछि -सत्ता प्राप्तिक
क रक्षक वर्गसँ जँ दलीय,
वैयक्तिक स्वार्थ पुरवाओल
वयतः ओहो वर्ग तकर बद-
शूटि लेत -अपराधकर्मीसँ
निर्भय रहत जे हमरा डर
। शासक-प्रशासक हमर
सब नहिये । जाधरि प्रशा-
र्थमे दुरुपयोग होइत रहत,
नमे दक्ष नहि भऽ सकत-
वस्था बढिते जायत ।
अपन दलीय शासनक हेतु
। उपर्युक्त रूपेँ करत तँ
एकित रहते-चोरि-डाका

आश्चर्य तँ ई जे बुल्हाइओ बाबूकेँ
ई कथा ततेक अप्रिय लगलनि जे द्वादशाह
दिन हमरा नोँत नहि देलनि । आर सुनू-
अहाँ लोकनि छात्रकेँ पढ़ाकऽ गोल्डमेड-
लिस्ट बनबैत छी आ हमरा लोकनि प्राइ-
मरी स्कूलमे, पोटा पोछब, शौच करब,
धड़िया पहिरब सँह सभ सिखबैत रहि-
जाइत छिएक । तखन एकटा उडमेडलिस्ट
हमहू बनौने छी ।

हम उत्सुकतासँ तकलियनि तँ बज-
लाह -नहि बुझलहुँ, एक टा बाछी पोसने
छी से तेहन हराहि अछि जे गर्दनिमे एक
टा खाटक पौआ लटका देने छिएक ।
तँयो कखनो डोरी छुटल तँ तीनू लोक घुमा
दैत अछि । ओ बाछी एक दिन भाँटाक
बाड़ीमे चल गेलनि ताहिले थुककम फज्जती
कयलनि । आव, पुरने बातकेँ लऽ कऽ
गामसँ हमर बदली करबा देलनि अछि ।

आब अहाँक शरणमे आयल छी ।
कोनो जोगाइसँ एकरा रोकबा दी ।

मिश्र टोला, दरभंगा ।

डेग

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

विगत तथा आगत प्रभातकेर मध्य विन्दु
सन्ध्या थिक, ई बात निर्विवाद सत्य अछि
गेड भले जाति दियेक तकर बात भिन्न भेल ।
सन्ध्या अन्हारकेर आगमनक सूचक थिक ।
तारासभ भरि राति अपसेयाँत होइत रहत
चन्द्रमो तँ कूदफान करबे करताह, मुदा
अन्धकार तानि लेत
छतरी आकाश बीच,
डटल रहत तावत धरि
जा' धरि अखण्ड ज्योति जागत नहि ।
कविवर कबीर केर 'तनके चदरिया'के
समय अँटकि तागत नहि,
अन्धकार भागत नहि,
अनागतक स्वागतमे जा धरि मन लागत नहि ।
जीवनसँ जीवन धरि कालावधि नपलासँ
मध्य विन्दु मृत्यु थोक ।
जीवनकेर दर्शन तँ
भिन्न-भिन्न लोक हेतु भिन्न-भिन्न होइते छै,
किन्तु मृत्यु सत्य थोक ताहिमे विवाद कत ?
जीवन जे सम्प्रति छी भोगी रहल हमसभ मिलि
तकरे भविष्य जचन सत्य एक मात्र मृत्यु
तखन तकर डरे' सुटुकि बैसि रही कोन दावि
कायरता छोड़ि आर कहा की सकैत अछि ।
सोचू हे बन्धु ! तीत रहितो अतीत मधुर,
मृत्यु थिक भविष्य,
अतः दूनूके छोड़ि
वर्तमानके देखू आ तदनुसार डेग दियऽ जीवन-संघर्षमे ।

मिश्र टोला, दरभंगा

उत्तर नहि, समाधान ?

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

अनुशासन-बन्धन तँ उकरू लगैछ तथा
स्वेच्छाचारितेकेँ स्वतंत्रता बुझैत छी
से स्वेच्छाचारिता तँ सीमाकेँ टपने अछि
कोनो क्षेत्र बाँचल अछि जतऽ नहि देखाइत हो ?

ज्ञान-प्राप्ति हेतु पहिल सीढ़ी तँ श्रद्धा थिक
किन्तु आइ श्रद्धासँ अधिककेँ असर्धे अछि
जखने जे बूढ़ भेला तखने सेँ दूरि गेला
बूढ़ आ पुरान लोक सेहो कोनो लोके थिक ?

एहि शताब्दीक पहिल चरण बिता जे जनमल
सँह लोक आइ-काल्हि बुद्धिक बखारी अछि
टोकबै जँ कनियो तँ चट दऽ मुँह दूसि लेत
कहि देत- "जाउ, जाउ, अनका परतारबैक
हम तँ अभिमन्यु थिकहुँ, गर्भेसँ चक्रव्यूह--
भेदन केर प्रक्रिया सिखने बहरयलहुँ अछि ।"

बेसी जँ बाजब तँ मानि लेत महादेव
"बंबू" कहि कऽ चट ठामे ओ घड़ाय कहत-
"कयने छी आँटाकेँ गील आनि घरसँ तेँ
बगुली बिनु खोलने हम कलमे उठायब नहि" ।

नहि तँ स्वतंत्र देशकेर निवासीक हेतु
अनुशासन सेहज तथा स्वाभाविक 'धर्म थिकै'
से जँ नहि बुझलक तँ भेल ओ स्वतंत्र कोना
ताहि हेतु शासनकेँ अंकुश लगबऽ पड़ैक ?
पैसल प्रशासनमे कैन्सरसँ गलल अंग
कतरि-कतरि फेकवाक कतहु कोनो काज होइक ?
जकरा कनेको कर्तव्य-बोध छैक अपन
तकरा ले' निश्चय कलंककेर बात थिकै'
किन्तु की समाजकेँ कर्तव्य-बोध छैक अपन
एहि प्रश्नकेर उचित समाधान ताकक थिक ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।